International Journal of Research
Special Issue for Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 02 Issue 13
December 2015

1857 के विद्रोह के पश्चात दमन चक्र : मेवात एक अध्ययन

शर्मिला यादव
'शोध छात्रा, इतिहास विभाग
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

प्रस्तावनाः

1857 का विद्रोह भारत के इतिहास में ही नही बल्कि हरियाणा के इतिहास में भी महत्व पूर्ण स्थान रखता है। सामान्यता इतिहास के पन्नों में हमे दिल्ली की जनता पर अंग्रेजों दवारा किये गये अत्याचारों का वर्णन तो बहुत मिलता है परन्तु इतिहासकारों ने 1857 के दौरान मेवात क्षेत्रा के लोगो पर अंग्रेजों दवारा किये गये अत्याचारों व उन की कुर्बानियों को इतिहास के पन्नों में जगह देने में काफ्रफी कन्जुसी की है जबकि किसी भी इतिहास के निर्माण में क्षेत्राीय और आंचलिक संघर्षो का भी कम योगदान नजर नही आता परन्तु फ्रिफर भी इतिहास लेखन में क्षेत्राीय इतिहास की कमी ज्यों की त्यों बनी नजर आती है। मैनें इस लघु शोध पेपर ''1857 के विद्रोह के पश्चात दमन चक्र : मेवात का एक अध्ययन'' में इसी कमी को भरने और अंग्रेजों दवारा मेवात क्षेत्रा पर किये गये अत्याचारों का वर्णन करने का प्रयास किया है।

मेवात में 1857 के दमन चक्र का दौरः

1857 के विद्रोह मे भारत की जनता ने ही नही बल्कि हरियाणा के लोगो को भी अंग्रेजों के अत्याचारों को सहना पड़ा । 20 सितम्बर को दिल्ली पर अधिकार हो जाने के बाद अंग्रेजों ने हरियाणा की जनता को सबक सिखाने की सोची और यहा पर अपने अंग्रेज अधिकारियों को मिशन पर भेजा । अंग्रेज अधिकारियों ने हरियाणा की जनता पर बेरहमी से अत्याचार किये । उन के मन मे जरा भी दया भावना नही आयी और अगर हम दिल्ली के दक्षिण में स्थित व सराय लाट से लेकर अलवर तक तथा मथुरा से नारनौल तक हुआ क्षेत्रा उस समय के मेवात की बात करे तो हरियाणा का सब से अधिक तबाही वाला क्षेत्रा रहा । मेवातियों को अपने देश की स्वाधीनता के बदले भारी जुल्मो को सहना पड़ा।

International Journal of Research
Special Issue for Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 02 Issue 13
December 2015

1857 के विद्रोह में मेवातियों ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया और क्रांति के आरम्भ होते ही एक ही झटके में पूरा मेवात अंग्रेजी शासक से मुक्त हो गया। विद्रोह इतना जबरदस्त था कि विद्रोह को दबाने के लिए अंग्रेजों को कई बार अंग्रेजो को हार का सामना करना पड़ा और उनके सेनाधिकारी कई बार भाग खड़े हुये परन्तु मेवात में क्रांति की ज्वाला को मिटाने के लिए इन्होंने बड़ी ही क्रूरता का परिचय दिया। उन्होंने बहुत से गाट्टवों को तबाह कर दिया और न जाने कितने व्यक्ति लड़ते–लड़ते शहीद हो गये। अंग्रेजो का दमन चक्र तो इतना भयानक था कि एक बार तो इसे देख मानवता भी काट्टप जाये। मेवात में असली दमनचक्र तो 20 सितम्बर के बाद अंग्रेजो ने रचा परन्तु पहले हम विद्रोह के आरम्भ को लेते है। विद्रोह को दबाने के लिए विलियम फ्रफोर्ड, कलैक्टर मेजिस्ट्रेट आया परन्तु लोगों ने उस के साथ कड़ी लड़ाई लड़ी और उसके कुछ घोड़े भी छीन लिये और उसे भाग जाने पर मजबूर कर दिया। इसके बाद विद्रोह बड़ी तेजी से मेवात क्षेत्रा में फ्रफैल गया। विद्रोहियों ने न केवल अंग्रेजों को बल्कि नूंह के खानजादो, रावत के जाट तथा हथीन के राजपूतों को भी नहीं बख्सा जो कि अंग्रेजों का साथ दे रहे थे क्योंकि विद्रोही जानते थे कि जब तक इन अंग्रेज परस्तों को सबक नहीं सिखाया जाता, तब तक अंग्रेजों को हराना थोड़ा मुश्किल है, इस प्रकार इन पर हमला किया गया और इन्हें काफ्रफी नुकसान भी उठाना पड़ा।

जून के मध्य ईडन यहाट्ट से गुजर रहा था तो उसने सोचा कि दिल्ली जाने से पहले क्यों ना मेवातियों को सबक सिखाया जाये। उसे सोहना व तावडू के रास्ते में कठोर संघर्ष करना पड़ा उसने गोले व तोपों से कई गाट्टवों को तबाह कर दिया परन्तु वह सफ्रफल नहीं हुआ क्योंकि मेवाती उसके पीछे हाथ धोकर पड़ गये उसे ऐसा लगा जैसे उसने शान्त मधु मक्खियों के छते को भड़का दिया हो । क्योंकि मेवातियों ने छापामार यु(नीति से उसकी नाक में दम किये रखा। परन्तु उस ने तावडू व सोहना को ध्वस्त कर दिया और उस ने इसके बाद पलवल व होडल को निशाना बनाया। परन्तु वह अपने कार्य में सफ्रफल नहीं हो सका, वह मेवातियों की ज्वाला को न रोक सका। बल्कि स्वंय सबक सीख कर भाग गया, वह गोला बारूद व तोपों की वजह से बच गया और इन से क्रांतिकारियों को काफ्रफी नुकसान भी उठाना पड़ा। इस प्रकार जो काम उसने हाथ में लिया था, वह आसान नहीं था।

परन्तु 20 सितम्बर को दिल्ली पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया। तो अंग्रेजों ने अब दिल्ली के आस–पास वाले क्षेत्राों को सबक सिखाने की सोची। परन्तु मेवात की स्थिति अजीब थी। मेवात अभी भी शान्त नहीं था वहाट्ट पर क्रांति के दिवाने अपने–अपने मोर्चे पर डट कर अंग्रेजों का

International Journal of Research
Special Issue for Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 02 Issue 13
December 2015

सफ्रफाया कर रहे थे और इन से अंग्रेज परस्तों को नुकसान उठाना पड़ रहा था। परन्तु अब अंग्रेजों का क्रोध बढ़ गया और वे पहले से अधिक क्रूर व निर्दयी हो गए क्योंकि उन्हें यह उम्मीद नहीं थी कि मेवाती जनता उन्हें इस प्रकार की टक्कर देगी और उन का दमन करना इतना मुश्किल हो जायेगा। परन्तु दिल्ली पर अधिकार होने के साथ ही शुरू हुआ, अंग्रेजों का निर्दयी अभियान, मेवातियों का दमन करने के लिए। इसके बाद अंग्रेजों ने बर्बरता, बेरहमी, निर्दयता, अमानवीयता और प्रतिरोध का प्रदर्शन किया।

मेवात में अंग्रेजों के दमनचक्र और क्रूरता का परिचय इस बात से मिलता है कि हरियाणा में मेवात क्षेत्रा सबसे अधिक नुकसान वाला क्षेत्रा रहा क्योंकि पूरे हरियाणा में एक अनुमान के अनुसार 3,467 व्यक्ति मारे गये और 115 गाट्टव तबाह हो गये[1] परन्तु अकेले मेवात क्षेत्रा में देखे तो सबसे अधिक हरियाणा के इसी क्षेत्रा में लगभग 1,019 लोगों की मृत्यु हुई और 42 गाट्टवों [2]को अंग्रेजों ने तबाह कर दिया। एक अनुमान के अनुसार मेवात में अंग्रेजों के दमनचक्र के दौरान 20 सितम्बर 1857 से सितम्बर 1858 तक लगभग 1,522 मेवाती मारे गये थे। इन की सख्या का विवरण तिथि,सघं स्थल, के अनुसार लगाते हुए तालिका रूप में इस प्रकार दिखाया जा सकता है।

मेवात में 20 सितम्बर 1857 से सितम्बर 1858 तक हुए अंग्रेजों से संघर्ष में

मेवाती शहीदों की संख्या

तिथि	स्थल व संघर्ष का विवरण	मेवाती शहीदों की संख्या
अक्टूबर 1857	तावडू ;मेवातद्ध में 'शार्क्स' से संघर्ष	30
नवम्बर 1857	नूंह ;मेवातद्ध क्षेत्रा में चौधरियों का संघर्ष	52
8 नवम्बर 1857	घासेड़ा ;मेवातद्ध में 'रांगटन' से संघर्ष	500
19 नवम्बर 1857	रूपड़ाका ;मेवातद्ध में 'ड्रमण्ड' से संघर्ष	400
30 नवम्बर 1857	नूंह ;मेवातद्ध में 'रामसे' से संघर्ष	70

दिसम्बर 1857 से सितम्बर 1858	मेवाती गाट्टवों में अंग्रेजों द्वारा फ्रफांसियाट्ट दी गई	470

इस तालिका से मेवातियों के ऊपर किए गये अत्याचारों का अनुमान लगा सकते है कि उनको कितने अत्याचारों का सामना करना पड़ा। अंग्रेजों के सामने जो कोई आया उसे मार दिया गया न केवल विद्रोहियों को बल्कि निर्दोष लोगों को भी नुकसान उठाना पड़ा। मेवात का कोई ऐसा घर नहीं जिसके घर से किसी ने शहादत न दी और सकैड़ों गाट्टवों को तबाह कर दिया गया।

मेवातियों पर अंग्रेजों का दमनचक्र 20 सितम्बर से 2 दिसम्बर तक चलता रहा। मेवातियों का दमन करने के लिए शावर्स, क्लिफ्रफोर्ड, रांगटन, ड्रमण्ड, रामसे अंग्रेज अधिकारी अभियान पर आए और बड़ी ही बेहरमी से इन्होंने मेवातियों की पर जुल्म ढाये व उन की सम्पत्ति को जब्त कर लिया। मेवात के लोगों को अंग्रेज अपना सबसे बड़ा दुश्मन समझते थे और इनका दमन करने के लिए शावर्स यहाट्ट भेजा गया। वह सोहना व तावडू में तीन दिन रूका और उसने इस क्षेत्रा को आग के हवाले कर दिया और यहाट्ट के गाट्टवों को जला डाला और यहाट्ट की जनता पर भारी कत्ले आम किया। इस प्रकार यहाट्ट कई दिनों तक मौत का ताण्डव चलता रहा।

उसने 70 से अधिक गाट्टवों को निशाना बनाया तथा लूटमार की। वह जिस गाट्टव को घेरता, उसकी तलाशी लेता, जिस व्यक्ति पर शक होता या फ्रिफर हथियार मिल जाता या फ्रिफर जहाट्ट विशेष वर्दी मिल जाती उन्हें गाट्टव में फ्रफाट्टसी दे देता था।[3]

एक तरफ्रफ शावर्स तो दूसरी तरफ्रफ क्लिफ्रफोर्ड भी दमनचक्र पर उतरा हुआ था। उसने होडल, पलवल, हथीन में कार्यवाही की। उसने यहाट्ट पर क्रूरता का परिचय दिया वह बदले की भावना से झुलस रहा था क्योंकि उसे पता चला था कि उस की बहन का क्रांतिकारियों ने कत्ल कर दिया है। इसलिए वह पागल सा हो गया था। उसने सोहना तक उसके रास्ते में आने वाले गाट्टवों को जला कर तबाह कर दिया व किसानों की फ्रफसलें भी जला दी। रायसीना क्षेत्रा में तो उसने बहुत ही जुल्म ढाये। उसने इन क्षेत्राों के बीस से अधिक गाट्टवों को जलाकर राख कर दिया व लोगों को मार डाला।

अंग्रेज होम्स मेवात के बारे में टिप्पणी करता है, ''जिन वृ(ों ने अंग्रेजों का कुछ न बिगाड़ा था व गोद में दूध पीते बच्चे लिए असहाय औरतों से अंग्रेजो ने उसी तरह बदला लिया जैसे धूर्त से धूर्त व्यक्तियों से।''[4] इस प्रकार उसके सामने जो आया उसे मार डाला गया। क्लिफ्रफोर्ड ने

मेवात की जनता पर बहुत अत्याचार किये और क्रूरता का नंगा नाच रचा। परन्तु वह अपने इस निर्दयी अभियान को ज्यादा समय तक न चला सका और क्रांतिकारियों के हाथों मारा गया।

इस प्रकार आस–पास कितने ही गाट्टवों की जमीन जब्त कर ली गई व इसे अंग्रेज परस्तो को दे दिया गया। ऐसी ही घटनाऐं घासेड़ा के आस–पास के गाट्टवों में भी घटी। अंग्रेज अफ्रफसरों में रागटन जो 8 नवम्बर को यहाट्ट आया था। उसने मेवात में आग व बारूद का खेल खेला। घासेड़ा में 150 मेव बहादुरी से लड़ते हुए शहीद हो गये। इसके बाद सेना ने गाट्टव में प्रवेश किया और जहाट्ट उन्हें कुछ बूढें व्यक्ति व महाजन मिले जिन्होंने अंग्रेजों के विरू(विद्रोह किया था उन का पीछा किया और बुरी तरह मार–काट मचाई।

यहाट्ट 500 से अधिक क्रांतिकारी मारे गए तथा रांगटन अपने अभियान में सफ्रफल रहा।[5] नूंह में अंग्रेजी सेना ने खैरा खानजादे की शिकायत पर नूंह अडवर तथा शाहपुर नगली के 52 मेव चौधरियों को बरगद के पेड़ पर लटकाकर फ्रफाट्टसी दे दी।[6] ये फ्रफाट्टसिया बताया जाता है कि आज के पुराने बस स्टैण्ड के पास बरगद के पेड़ के नीचे दी गई थी।

जब 52 आदमियों को फ्रफाट्टसी लग चुकी थी तो चौधरी मेदा मेवली बीच में आ गये तथा उन्होंने अंग्रेजों से अपने सम्बधों का फ्रफायदा उठाते हुये इस सिलसिले को बन्द करवाया। फ्रफाट्टसी की सजा के अतिरिक्त साढे तीन हजार रूपया जुर्माना भी किया गया।[7]

नवम्बर के तीसरे सप्ताह में कैप्टन ड्रमण्ड रूपड़ाका में एक बड़ी सेना लेकर आया और उसने सोहना व रूपड़ाका के रास्ते में पड़ने वाले गाट्टवों को बर्बाद कर दिया व फ्रफसलें नष्ट कर दी। इस प्रकार ड्रमण्ड के क्रुर चक्र का शिकार पचनका, गेहपुर, भालपुर, कुटावड, चिल्ली, कोट, मोठ मुगला, मनुका, मिराका इत्यादि गाट्टव हुये। इन गाट्टवों की न केवल फ्रफसलों को बल्कि घरों को भी आग लगा दी। रूपड़ाका के बाहर 3500 मेव वीरों ने बड़ी बहादुरी के साथ अंग्रेजी सेना का सामना किया, एक बार तो अंग्रेजी घबरा सी गई थी, परन्तु प्रशिक्षित सेना, गोला बारूद के सामने मेव कब तक डटते रहते आखिरकार वे हार गये। इस लड़ाई में 350–400 मेव बहादुरी से लड़ते हुए शहीद हो गये।

19 नवम्बर को रूपडाका में इन देशभक्तों की कुर्बानी को याद करने के लिए शहीदी दिवस मनाया जाता है।[8] इस प्रकार इतना कुछ होने के बाद भी मेवाती शान्त नहीं थे। वे फ्रिफर से सदरुर्दीन के नेतृत्व में उठ खड़े हुये। 29 नवम्बर को रामसे ने इनका मुकाबला किया। मेवातियों ने माहून गाट्टव में प्रतिरोध किया परन्तु क्रांतिकारियों को हार का सामना करना पड़ा। सदरुर्दीन का

International Journal of Research
Special Issue for Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 02 Issue 13
December 2015

बेटा व 28 अन्य व्यक्ति मारे गये। गुडगाट्टव के ज्वाइंट असिस्टेंट कमिश्नर लिखते है कि इस लड़ाई में मेवातियों ने बहादुरी का परिचय दिया और 70 लोगों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा।

मेवों के इस अन्तिम विद्रोह को कुचलने के पश्चात् और वापसी से पहले, अंग्रेज सेनाधिकारियों ने मेवों को जोरदार सबक सिखाने का फ्रफैसला किया। वे उन लोगों तथा गाट्टवों को, जिन्होंने इस क्रांति में विद्रोहियों का साथ दिया था तथा लगान देने से इन्कार कर दिया था, कड़ी सजाएं देकर उदाहरण पेश किया।[9] गाट्टव शाहपुर, बाली खेड़ा, खैरला, चितौरा, नाहरीकर, गुजरनगला, बहारपुर, खेड़ी इत्यादि को जलाकर इनका नामोनिशान मिटाते हुए, अंग्रेजी सेना ने वापस मुड़ना शुरु किया। वापिस जाते हुए पिनगंवा के समीप के गाट्टवों जिन्होंने विद्रोही नेता सदरुर्रीन का साथ दिया था और ब्रिटिश सरकार को भूमि कर देने से इन्कार किया था, उनका भी यही हाल किया गया।[10]

कई गाट्टवों के चौधरियों व लम्बरदारों को जमीन सम्पत्ति को 1857–1858 के 25वें एक्ट के तहत जब्त कर लिया था। ऐसा उनके साथ क्रांति करने व अंग्रेजों की सहायता न करने के कारण किया गया। झाड़सा, खेरी, जलालपुर, देवला, शिकरावाह, घाघस, खेड़ी ;नूंह परगने मेंद्ध नामक गाट्टवों की सारी जमीन सरकार ने छीन ली।[11]

उर्मिपुर और झाडसा के बख्तावर सिंह, बादशाहपुर और घाबूसपुर के इलाही बख्श, झाडसा परगना के भौंरा और बिनौला के अबु, शाहजहाट्टपुर के ब्रिजनन्द, नौरंगपुर के मीरखान, छज्जूनगर के रामजस और हमजाअली और पलवल परगने में रसूलपुर के जाफ्रफर नूरखान और शरीबा की जमीनें भी जब्त कर ली गई। इसके अतिरिक्त 235 व्यक्तियों को फ्रफाट्टसी पर लटका दिया गया और कईयों को विद्रोह में भाग लेने के कारण लम्बे समय की कैद मिली। विद्रोही गाट्टवों और व्यक्तियों पर काफ्रफी जुर्माने किये गये।[12]

दिसम्बर 1857 से लेकर सितम्बर 1858 के बीच 470 मेवातियों को उनके अपने गाट्टवों में फ्रफाट्टसी दी गयी। मेवात में शायद ही कोई ऐसा घर था, जिसका कोई सदस्य शहीद न हुआ हो या जमीन जब्त न हुई हो या फ्रिफर कम से कम जायदाद का पाट्टचवा हिस्सा बतौर जुर्माना न भरना पड़ा हो।[13]

रायसिना, सापकी, नंगली, दोहा, मेवान पट्‌टी, नूंह, डुण्डाहेडी गाट्टवों की जमीन अंग्रेजो के समर्थकों व मुखबिरों में बट्टटवा दी। मेवात की शक्ति को कमजोर करने के लिए इस क्षेत्रा को गुडगाट्टव, मथुरा, भरतपुर तथा अलवर के विभिन्न क्षेत्रों में बाट्टट दिया। दिल्ली के साथ लगते कई गाट्टवों को उजाड़कर उन्हें सरकार ने अधिकार में ले लिया। जहाट्ट पर आरद्गकेद्ब पुरम, वायसराय

हाउस ;वर्तमान संसद भवनद्ध साऊथ, एक्सटेंशन तथा कनॉट प्लेस आदि बना दिए गए। मेवातियों को आगे सेना में शामिल होने पर प्रतिबंध लगा दिया।[14] इस प्रकार हम कह सकते हैं कि अंग्रेजों ने विद्रोह का दमन करने के लिए किस प्रकार की क्रूरता का परिचय दिया। लोक नायक ने मेवात में अंग्रेजों के दमनचक्र का वर्णन इन शब्दों में किया है–

''मोल चुकायो भारी, जा दिन शेर हुआ अंग्रेज,
फ्रफाट्टसी चढ़े हजारों, इन सु जेल हुई लबरेज।
वीर शहीदों की धरती ने पर ना मानी हार,
सत्तावन हमने सीना पे लड़ी।
जोधा उठगा, तोली अंग्रेज तलवार।''[15]

निष्कर्ष

इस प्रकार उपरोक्त वर्णन से स्पष्ट हो जाता है कि अंग्रेजी सेना ने मेवात में विद्रोह का दमन बड़ी ही नृशंतापूर्वक किया गया। इस अभियान में असंख्य मेवाती मारे गए और बहुत से गाट्टवों व उन की फ्रफसलों को तबाह कर दिया। प्रथम स्वतन्त्राता संग्राम में भाग लेने वाले मेवातियों को फ्रफाट्टसी और कठोर सजायें दी गई। लोगों की सम्पत्ति छीन ली गई और उन्हें अंग्रेज परस्तों में बाट्टट दिया गया, मेवातियों की सेना में भर्ती पर पाबंदी लगा दी।

विभिन्न रिकॉडों से पता चलता है कि 1857 के समय मेवातियों की जो जमीने छीन ली गई थी उन्हें आज तक उनके वंशजों को वापस नहीं किया गया है। जो जमीने मेवातियों की थी, आज तक उन पर अंग्रेज परस्त लोगों का अधिकार है और स्वतन्त्राता संग्राम के सिपाहियों के वंशज अपनी ही जमीनों पर मुजारे बन कर रह गये। संक्षेप में हम कह सकते है कि मेवात के बहादुर मेवातियों के संघर्ष व शहादत को कभी भी भुलाया नहीं जा सकता, इनकी कुर्बानियों के हमेशा ही इतिहास के पन्नों में स्वर्ण अक्षरों पर लिखा जायेगा।

पाद–टिप्पणी

[1] यादव केद्रसीद्र, *रोल ऑफ्रफ ऑनर : सैन्टर फ्रफोर स्ट्डीज ऑफ्रफ हरियाणा हिस्ट्री,* कल्चर एण्ड सोशल डव्लपमेंट, हिपा, गुड़गाट्टव, 2008, पृद्र 22

[2] वही, पृद्र 22

[3] सिंह महेन्द्र, *हरियाणा में 1857 : जन विद्रोह, दमन व लोकचेतना*, विवेक प्रकाशन, हिसार, 2009, पृद्ध 142

[4] खाण्डेवाल कृष्ण कुमार व अन्य, हरियाणा एनसाइक्लोपीडिया–4, इतिहास भाग–2, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010 पूर्वोक्त, पृद्ध 349

[5] सिंह महेन्द्र,, पृद्ध 63

[6] *जय हिन्द ;पत्रिकाद्ध, 1857 की जन–क्रांति में हरियाणा का योगदान,* लोक सम्पर्क एवं सांस्कृतिक कार्य विभाग, अभिलेखागार विभाग, हरियाणा तथा भारतीय इतिहास अनुसन्धान परिषद् द्वारा प्रस्तुत, 2007, पृद्ध 26

[7] मेव सिर्किे अहमद, *संग्राम 1857 मेवातियों का योगदान*, मेवात साहित्य अकादमी, 2006, पृद्ध 60

[8] *जय हिन्द ;पत्रिकाद्ध, 1857 की जन–क्रांति में हरियाणा का योगदान*, पूर्वोक्त, पृद्ध 26

[9] मेव सिर्किे अहमद, *संग्राम 1857 मेवातियों का योगदान*, पूर्वोक्त, पृद्ध 79

[10] जाखड रामसिंह, *1857 की जनक्रांति में हरियाणा का योगदान*, अभिलेखागार विभाग हरियाणा,पंचकुला,1999, पृद्ध 24

[11] हरियाणा जिला गजेटियर गुडगाद्रव,1983, पृद्ध 65ँ प्रकाश बु(, *ग्लिम्पसेज ऑफ्रफ हरियाणा*, कुरुक्षेत्रा विश्वविद्यालय, 1967, पूर्वोक्त, पृद्ध 89ँ सिंह जेद्रएनद्र, *हरियाणा ;स्ट्डीज इन हिस्ट्री एण्ड पोलिटिक्लद्ध*, विरोस् प्रकाशन, गुड़गाद्रव, 1976 पृद्ध 56ँ वालिया तेजिन्दर सिंह, , हरियाणा दी टॉर्च बेअर्र ऑफ्रफ 1857, अग्रवाल पब्लिकेशन, अंबाला, 2008, पृद्ध 162

[12] जाखड़ रामसिंह, *1857 की जनक्रांति में हरियाणा का योगदान*, पूर्वोक्त, पृद्ध 24

[13] खाण्डेवाल कृष्ण कुमार व अन्य, हरियाणा एन्साइक्लोपीडिया–4, इतिहास भाग–2, पूर्वोक्त, पृद्ध 349

[14] सिंह महेन्द्र, पूर्वोक्त, पृद्ध 143

[15] वही, पृद्ध 188

International Journal of Research
Special Issue for Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 02 Issue 13
December 2015

Research Paper Published by International Journal, Central India Journal of Historical and Archaeological Research (CIJHAR), Panna(MP), Vol. 3, April – June 2014, No. 10 , ISSN 2277-4157, Page no. 217-221

Sharmila yadav
Research scholar,
History department,
MDU